B.A. Part I
Hindi Hons
Paper 1
मध्यकालीन हिन्दी काव्य
सूरदास

7/7/20

डॉ० उपासना कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर
हिंदी विभाग
एस०एन० सिन्हा कॉलेज,
जहानाबाद

प्रश्न:- सूरदास के वात्सल्य वर्णन पर प्रकाश डालें।

उत्तर - महाकवि सूरदास की लेखनी का अधिकार शृंगार के साथ-साथ वात्सल्य पर भी समान रूप से है। बाल मनोविज्ञान का ऐसा आनन्ददायक और मनोमुग्धकारी वर्णन सूर ने अपनी बंद आँखों से किया है उतना आँख वाले न कर सके हैं। इसलिए सूर-साहित्य के मर्मज्ञ विद्वान आचार्य राम चन्द्र शुक्ल ने तो इनके वात्सल्य वर्णन पर रीझ कर यहाँ तक लिख दिया है कि - ''जितने विस्तृत और विशद रूप में बाल जीवन का चित्रण इन्होंने किया है, उतने विस्तृत रूप में और किसी कवि ने नहीं किया।''

रूप चित्रण के दो भाग होते हैं - स्थिर और गत्यात्मक। जहाँ कृष्ण के मुखड़े, आँखें, लट तथा टोपी इत्यादि का वर्णन है वहाँ रूप का स्थिर चित्रण है पर जहाँ कृष्ण के चलते, खेलते, दौड़ते इत्यादि अवस्था का चित्रण है वहाँ रूप का गत्यात्मक चित्रण है। 'देखो री सुन्दरता के सागर' पद में स्थिर रूप चित्रण को देखा जा सकता है तथा 'जसोदा हरि पालने झुलावै', 'सिखवत चलन जसोदा मैया' आदि पदों में गत्यात्मक चित्रण के उदाहरण को देखा जा सकता है।

सूर ने रूप चित्रण को ही केवल अपनी लेखनी का आधार नहीं बनाया बल्कि बालकों के अन्तः उदर में प्रवेश कर उनकी प्रत्येक प्रवृत्तियों का भी सूक्ष्मता से अवलोकन किया। बालकों में हठ की प्रवृत्ति होती है। सूर के कृष्ण भी हठी हैं। वे तो चाँद के लिए मचलते हैं तो फिर मानने का नाम नहीं लेते। यशोदा मनाती है पर वे साफ शब्दों में कह देते हैं —

क्रमशः —

Hindi
B.A. Hons (2) सूरदास
Part I

मैया मैं तो चन्द्र खिलौना लैहौं।
जैहौं लोट धरनी पर अबही तेरी गोद न अइहौं॥

बालकों में स्पर्धा की प्रवृत्ति होती है। स्पर्धा का अर्थ होता है दूसरों की बराबरी करने की इच्छा। कृष्ण बलराम की लम्बी चोटी देखकर ललचा जाते हैं। उनके मन में अपनी चोटी को भी उतनी ही लम्बी करने की चाह होती है। कृष्ण यशोदा से मन की बात कहते हैं। यशोदा कहती है कि - तू दूध पियेगा तो तेरी चोटी भी लम्बी हो जायेगी। लगातार दूध पीने पर भी जब चोटी लम्बी नहीं होती तो वे यशोदा से शिकायत करते हैं —

मैया ~~[illegible]~~ कबहिं बढ़ैगी चोटी।
किती बार मोहि दूध पियत भई, यह अजहूँ है छोटी।

कृष्ण दही चुराकर खाते हैं। चोरी पकड़ी जाती है। माँ के पूछने पर मुँह का दधि पोंछकर बहाना बनाने लगते हैं तथा कई तरह के तर्क देते हैं। अन्त में कृष्ण कहते हैं —

यह ले अपनी लकुट कमरिया
यह लो अपनी चोटी
तेरी कौन चराओ गैया
स्वाकर बालकगोही ॥

कृष्ण के उत्तर में वाग्विदग्धता है पर उनकी तुतला बोलने में जो स्वाभाविकता है वह सूर के वात्सल्य का केन्द्र बिन्दु है।

वात्सल्य के दो पक्ष होते हैं - संयोग पक्ष और मातृ-पितृ पक्ष। संयोग पक्ष के बाद अब हम मातृ-पितृ पक्ष का वर्णन करते हैं। इस वर्णन में सूर ने यशोदा को बीच में लाकर कायम कर दिया है। वस्तुतः यशोदा को उपलक्ष्य करके सूर का वात्सल्य वर्णन शत-शत स्रोतों में उद्वेलित हो उठा है। हर माँ की तरह यशोदा भी अपने कृष्ण को सयाना देखना चाहती है —

जसुमति मन अभिलाष करै।
कब मेरो लाल घुटुरुवन रेंगे, कब धरनी पग द्वैक धरै।

हर माँ की तरह यशोदा भी चाहती है कि उसका पुत्र भी उनकी आँखों के सामने रहे। कृष्ण जब खेलने जाते हैं तब यशोदा आशंकित हो जाती है —